



**KALINDI COLLEGE
NCWEB
UNIVERSITY OF DELHI**

कालिंदी धारा

**KALINDI DHARA
2020-2021**



Contents

Pg no.

1. EDITORIAL TEAM	1
2. MESSAGE FROM PRINCIPAL	2
3. MESSAGE FROM DIRECTOR	3
4. MESSAGE FROM DEPUTY DIRECTOR	4
5. MESSAGE FROM CO-ORDINATOR	5
6. MESSAGE FROM DEPUTY CO-ORDINATORS	6-8

7. हिंदी खण्ड:-

क्र.स.	रचना	रचनाकार	
1.	लघुकथा रोजी-रोटी	डॉ. मीनाक्षी, सहायक प्राध्यापक	9-10
2.	सकारात्मक सोच	डॉ. मीनाक्षी, सहायक प्राध्यापक	10
3.	मेरी तो आप ही हो दुनिया मेरे पापा	अंकिता, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	11
4.	काश ज़िंदगी एक किताब होती	प्रिया कुमारी, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	11
5.	जल है जीवन का आधार	नेहा, बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष	12
6.	माँ	एकता, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	12
7.	नारी का सम्मान	एकता, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	13
8.	जगत जननी नारी	प्रिया कुमारी, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	13
9.	हे आसमां	पूनम गुसाई, बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष	14
10.	मंज़िल की तलाश	पूर्णिमा श्रीवास्तव, बी.कॉम प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष	14
11.	ऐ कोरोना हमसे तुम डरो ना	तन्तू टकराल, बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष	15
12.	कोरोना को है हराना	तरन्तुम, बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष	15
13.	खुश हूँ	देवांगशी चक्रवर्ती, बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष	16
14.	कौन होती है नारी?	रुकसार, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	16
15.	लक्ष्य	तनु दीक्षित, बी.ए. प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष	17
16.	आज की नारी	सोनाली, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	18
17.	खुली किताब हूँ	तबस्सुम, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	18
18.	व्यक्तित्व इंसान का आईना होता है	शीतल, बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष	19
19.	मेरा परिवार	श्रुति झा, बी.कॉम प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष	20
20.	हिंदी टी.वी. सीरियल में नारी की बदलती हुई छवि	रुकसार, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	21
21.	क्रोध करना अच्छा नहीं होता	अंकिता, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	22
22.	रेल का पहला सफर वाराणसी तक	प्राची कुमार, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	23-25
23.	नारी की बढ़ती उड़ान	अंकिता, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	26
24.	लड़कियाँ	शिवानी, बी.कॉम प्रोग्राम, द्वितीय वर्ष	26
25.	चुटकुला	नेहा, बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष	27
26.	अमीर खरीब महान बुढ़िया	तन्तू टकराल, बी.ए. प्रोग्राम, प्रथम वर्ष	27



8. संस्कृत खण्ड:-

क्र.स. रचना	रचनाकार	
1. लालनगीतम्	प्रिया कुमारी, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	28
2. सूक्तय	प्रीति, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	29
3. प्रेरणादायक श्लोक	प्रिया कुमारी, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	30
4. श्लोक	स्वाति कुमारी, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	31
5. किलोत्पाटि वानरकथा	स्वाति कुमारी, बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष	32



9. ENGLISH SECTION

S. No. Contents	Writer	
1. Teaching in the Time of COVID-19	Shibangi Dash, Assistant Professor	33-34
2. Coronavirus	Neha, B.A. Programme, 1st Year	35
3. The Earth	Neha, B.A. Programme, 1st year	36
4. Be The Change You Want To See	Muskan, B.A. Programme, 1st year	36
5. Peace	Ekta, B.A. Programme, 3rd year	37
6. The Song of The Stars	Sejal, B.A. Programme, 1st year	37
8. Days Teach Me	Devangshi Chakraborty, B.Com Programme, 2nd Year	38
9. When All Hopes Are Dead	Shaheen khanam, B.Com Programme, 3rd Year	39
10. Woman Power	Akansha, B.Com Programme, 3rd year	39
11. Under The Harvest Moon	Sejal, B.A. Programme, 1st year	40
12. Thoughts	Sheryl Khurana, B.Com Programme, 2nd year	40
13. Save Tree Save Life	Priya Kumari B.A. Programme, 3rd year	41
14. Tongue Twisting Trouble	Shaheen Khanam B.Com Programme, 3rd year	42
15. From Deep Core of My Heart	Poornima Shrivastava, B.Com Programme, 2nd year	42
16. Lockdown Diary	Vinita Agarwal, B.Com programme, 3rd Year	43



10. ART GALLERY

44-45



11. POSTERS

46



12. MESSAGE FROM STUDENT UNION

47-49



कालिंदी धारा

कालिंदी महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय नॉन कॉलेजिएट वूमेंस एजुकेशन बोर्ड)

प्राचार्या



डॉ. नैना हसीजा

प्रभारी



डॉ. निवेदिता गिरि

उप-प्रभारी



डॉ. प्रियाबाला सिंह

संपादक मंडल

(हिंदी विभाग)



डॉ. मीनाक्षी



डॉ. दीपिका



श्रुति गौतम

(संस्कृत विभाग)



डॉ. लीना चौहान

(अंग्रेजी विभाग)



शिबांगी दास

सहयोग



गरिमा नेगी



रुकसार



श्रुति झा



आयशा ढौंडियाल



Message from Principal...



Non Collegiate Women Education Board now a days is one of the strongest platforms providing education to the young women of our country. The Kalindi College Centre is looking after the overall development of these girls.

The present annual magazine Kalindi Dhara is an effort in this direction. This is the 3rd edition in the series. Even the prevailing pandemic could not deter them from bringing out their 3rd issue of this magazine. Each content of it exhibits the noble idea and talent of these young girls.

I'm sure readers are going to enjoy it.

Congratulations to the editorial board and all the best for your future.

Dr. Naina Hasija
Principal
Kalindi College



शुभकामना संदेश

स्वामी विवेकानंद के शब्दों में -" मानव द्वारा विकसित
भाषा अपने भीतर के सत्य को समझने का प्रयास है।"

नॉन कॉलेजिएट वूमंस एजुकेशन बोर्ड के कालिंदी कॉलेज सेंटर द्वारा 'कालिंदी धारा' 2020-21 अंक, पत्रिका श्रृंखला का तीसरा अध्याय है। यह जान कर अत्यंत हर्ष हुआ कि कालिंदी सेंटर की छात्राओं ने अपनी रचनात्मकता और भाषा ज्ञान को लेखन, कविता, कहानी, नाटक के माध्यम से इस पत्रिका में अभिव्यक्त किया है। आपके सेंटर की छात्राएं अत्यंत मेधावी और परिश्रमशील हैं। आशा है कि वे अपने जीवन में आपके सानिध्य में सीखे आचार-विचार और ज्ञान से सक्षम बनेंगीं और सफलता के आयाम चूमेंगीं। सेंटर की शिक्षक प्रभारी निवेदिता जी, कालिंदी सेंटर के अतिथि शिक्षक और सेंटर से जुड़े कर्मचारियों का अभिनन्दन, जो छात्रों के सम्पूर्ण विकास के लिए सदैव समर्पित हैं। सेंटर की प्राचार्या प्रोफेसर नैना हसीजा जी का छात्राओं की आवश्यकताओं का विशेष ध्यान रखने के लिए अभिनन्दन।

शुभकामनाओं सहित।

गीता भट्ट

अपनी रचनात्मकता और अभिव्यक्ति को शब्दों का रूप दे, लेखन, कविता, कहानी, नाटक जैसे कई माध्यम चुनें।

डॉ. गीता भट्ट

निर्देशक

एन.सी.वेब.

दिल्ली विश्वविद्यालय

उप-निदेशक की कलम से.....



‘कालिन्दी धारा’ कालिन्दी महाविद्यालय एनसीवेब केन्द्र की वार्षिक ई-पत्रिका है और इसमें लिखी गयी रचनाएँ छात्राओं की बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाती हैं। इस पत्रिका में छात्राओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति उद्यमशीलता, कल्पनाशीलता, मातृभूमि के प्रति समर्पण एवं प्रकृति के प्रति संवेदना स्पष्ट रूप से उनकी रचनाओं में परिलक्षित हो रही हैं।

छात्राओं के विभिन्न भाव यथा – नारीत्व, मातृत्व, ममत्व आदि के साथ-साथ उनका समाज से एक सवाल जो कि उनके अस्तित्व, सम्मान, उनकी सराहना तथा उनकी स्वतंत्रता से है – को देखकर यह संतुष्टि होती है कि हमारी छात्राएं सभ्य, संवेदनशील एवं सशक्त हैं। मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त हूँ कि हमारे देश का भविष्य इस प्रकार की कर्मठ युवा पीढ़ी के हाथों में सुरक्षित रहेगा। आज जब भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व कोरोना महामारी से ग्रस्त है और इस महामारी के काल में इस प्रकार के शैक्षणिक कार्य की हृदय से प्रशंसा करता हूँ।

**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥**

निःस्पृह होकर सतत् कर्तव्य पालन की प्रेरणा देने वाले ईशावास्योपनिषद् के इस मन्त्र को आधार मानकर कालिन्दी महाविद्यालय, एनसीवेब केन्द्र की प्राचार्या, केन्द्र प्रभारी, शिक्षकगण, गैर-शिक्षण कर्मचारी सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं, जिनके अथक प्रयासों ने इस प्रकाशन को संभव बनाया है।

कालिन्दी महाविद्यालय एनसीवेब केन्द्र की सभी छात्राओं को शुभकामनाएँ देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

डॉ. उमाशंकर

**उप-निर्देशक, एन.सी.वेब.
दिल्ली विश्वविद्यालय**

Message from Co-ordinator...



"It always seems impossible until it is done".

The pandemic has grasped us in its claws for the second year in a row now. The closure of educational institutions and the lack of lively classroom interaction has further cornered us into isolation. But on a positive note we've managed to not only continue imparting education through online platforms but also extended helping hands in these distressed times. The lack of human touch could not deter the continuance of classes as well as co-curricular and extra-curricular activities. The wholehearted and zealous co-operation between teachers and students has made all these possible. On this I would congratulate all my dear students that we've made it here! We'll make it even far! We have come out with another incredible issue of Kalindi Dhara in 2021. This issue is quite enriching and insightful with amazing youthful thoughts and ideas. I am so pleased that the students have exercised their freedom of thought and expression through this magazine. The e-publication of Kalindi Dhara stands as a testimony to this.

I would urge all the students to never lose hope and get disheartened in adverse situations. These are the trying times that bring out the stronger versions of ourselves. We must choose to be optimistic and look into the brighter side to stay motivated. We must always be kind towards others and remain hopeful for a better tomorrow.

My best wishes to the outgoing batch for their future endeavours and may they taste success in every walk of life.

Stay healthy and safe

Blessings and Good luck

Dr. Nivedita Giri
Co-ordinator
Kalindi College
NCWEB, DU



शुभकामना संदेश

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि कालिंदी महाविद्यालय के नॉन कॉलेजिएट विमेंस एजुकेशन बोर्ड के द्वारा सत्र 2020-21 की अपनी

वार्षिक-ई पत्रिका कालिंदी धारा का प्रकाशन किया जा रहा है। 2019 से लेकर अब तक चल रहे कोविड-19 जैसे भयंकर काल के उपस्थित होते हुए और उससे जूझते हुए भी समस्त अध्यापकगणों एवं छात्राओं ने अपने मानसिक एवं शारीरिक अथक प्रयास के द्वारा कालिंदी धारा को प्रकाशित करने में अपना जो सहयोग दिया है वह प्रशंसनीय है। इन लोगों के सहयोग के बिना यह कार्य शायद संभव नहीं था क्योंकि बौद्धिक कार्य के साथ साथ कुछ हमारे साथी इस बीमारी से भी जूझ रहे थे। इन सबके प्रति मैं पूर्ण रूपेण कृतज्ञता अभिव्यक्त करती हूँ। मैं डॉ. निवेदिता गिरि, अपने समस्त अध्यापकगणों, छात्राओं तथा पूर्ण नॉन टीचिंग स्टाफ का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। इस पत्रिका में छात्राओं ने अपनी भावाभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में और विभिन्न क्षेत्रों में अपनी रचनाओं के द्वारा की हैं, जिससे यह पता चलता है कि NCWEB की छात्राएं केवल पढ़ाई के क्षेत्र में ही नहीं अपितु बहुआयामी प्रतिभा की भी धनी हैं। अपनी छात्राओं के भविष्य के लिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करते हुए यह कामना करती हूँ कि वह अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करें तथा अपने अध्यापकगणों से यह आशा करती हूँ कि वह छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें प्रशस्ति के मार्ग की ओर अग्रसर करने में हमारा पूर्ण सहयोग करेंगे। नॉन टीचिंग विभाग हमारा वह स्तम्भ हैं जिसके बिना किसी भी ईमारत की नींव डालना संभव नहीं है अतः उनसे मैं यह उम्मीद रखती हूँ कि वह सदैव इसी प्रकार हमारा सहयोग करें।

डॉ. मंजू लता

उप-समन्वयक

कालिंदी महाविद्यालय

एन.सी.वेब.

दिल्ली विश्वविद्यालय

(Till 16 June, 2021)

Message from Deputy Co-ordinator...



It is a matter of great honour and joy to have got the opportunity of a new stint as Deputy Coordinator of NCWEB, Kalindi College Centre. We have experienced

unusual and testing times in our recent memory. However, despite the obstacles and disturbances caused by the pandemic, the NCWEB community has pursued teaching and learning with great vigor and intensity. I congratulate our NCWEB students, faculty, and administrative staff for smoothly sailing through these challenging times. I am looking forward to working with this great team.

Churning an idea and then weaving it into a world of words is one of the most difficult and creative ways of leaving an impact- becoming an augury of change in society. Kalindi Dhara is one such endeavour of our NCWEB students. Therefore, it is a matter of pride and pleasure to see these multifaceted and dynamic young women engaged in creating a constructive 'impact' with the force of their ideas and thoughts through their articles, prose, poems, paintings, stories, etc., in this wonderful attempt of 3rd volume of Kalindi Dhara, the annual E-magazine by Kalindi College NCWEB students. The magazine stages the incredible talent, energy, and vigor of the students.

Despite the challenges presented by the ongoing pandemic, the students have toiled hard, under the guidance of the teachers, to bring out this very new issue of the magazine, manifesting their creativity as well as their ability to perform under stressful times with remarkable teamwork without compromising even a bit on enthusiasm, rigor, and confidence. The magazine is a canvas splashed with colorful thoughts of these beautiful minds.

I wish all the students the very best for their future endeavours: Dream. Do not be afraid of dreaming. Work towards your dreams. Sometimes you will fail. It is a part of the cycle of success to falter, fail and learn. To start and hesitate. To fall short. To recover and to reimagine. As George Bernard Shaw, the famous Irish writer, says, "Imagination is the beginning of creation. You imagine what you desire, you will what you imagine, and at last, you create what you will."

All the very best. Keep the excellent work up in the future as well!

Dr. Priyabala Singh

Deputy Co-ordinator

Kalindi College

NCWEB, DU

(From 17 June, 2021)

[लघुकथा रोजी-रोटी]

वैष्णोदेवी में ऊपर भवन में माता के दर्शन अच्छे से हो गए। अब कटरा वापस लौटना है। रात के दो बजे चुके हैं और मेरा 15 महीने का बेटा भी गोद में सो गया। अभी अर्धकुवारी 7 कि.मी. दूर है वही से घोड़ा मिल सकता है। यहां कोई घोड़े वाला मिलेगा नहीं और बेटे को उठाकर चलना मुश्किल हो रहा था कि तभी एक आवाज आई, पिट्टू चाहिए दीदी। मैंने नजर उठाकर देखा तो सामने लगभग 15 वर्ष का लड़का खड़ा था। वह बोला, " दीदी, अर्धकुवारी तक बच्चे को गोद में लेकर चलूंगा।"

मैंने सकपकाते हुए कहा, " भइया, बच्चा छोटा है आराम से लेकर चलोगे। कितने पैसे लोगे।"

वह बोला - दीदी, 200 रूपये दे देना और घबराओ नहीं, इससे छोटे-छोटे बच्चों को हम रोज उठा कर चलते हैं। ये हमारा रोज का काम है।

मुझे लगा पैसे ज्यादा नहीं हैं और बच्चे को उठाकर चलना मुश्किल है तो मैंने तुरंत हाँ कर दी।

उसने अपना कंबल खोला और पीठ पर बेटे को लेते हुए उससे कसकर बाँध लिया। एक हाथ पीछे की ओर और दूसरा कंबल के छोर को पकड़े हुए चल दिया।

मैंने उसके तेज कदमों से कदम मिलाते हुए बातचीत शुरू कर दी। मैंने उससे पूछा कि रहते कहाँ हो।

उसने कहा, " यहीं कहीं भी कंबल लेकर सो जाता हूँ।"

मैंने पूछा, " पढ़ाई करते हो।"

उसने जबाव दिया, " सातवीं तक पढ़ा हूँ। पापा नहीं रहे तो पढ़ाई छोड़कर काम करने लगा। घर में छोटे भाई-बहन भी हैं उनका गुजारा कैसे चलेगा।"

मैंने पूछा, " जब यात्री नहीं आते तो क्या करते हो।"

वह बोला, "मई-जून में यहाँ बहुत भीड़ होती है। सर्दियों और बारिश में यहाँ ज्यादा लोग नहीं आते। तब वापस गाँव जाकर कोई भी काम कर लेता हूँ।

बात करते करते 7 कि.मी. का सफर कैसे पूरा हो गया पता नहीं चला।

अर्धकुंवारी पहुंचते ही तय पैसों से अलग उसने चाय पानी के नाम पर भी पैसे मांगे और मैंने खुशी खुशी दे दिए।

बाद में पता चला कि उसने चाय पानी के नाम से पैसे परिवार के प्रत्येक सदस्य से लिये जो कुछ दूरी पर आगे पीछे थे।

मैंने मुस्कुराते हुए कहा, " यही तो उनकी रोजी - रोटी है। हमसे नहीं कमाएंगे तो कैसे गुजारा बसर करेंगे।"

सकारात्मक सोच

दो लोगो की तनख्वाह बढ़ी। दोनों की आमदनी पहले भी बराबर थी और बढ़ावा भी एक जितना ही हुआ। पहले को विचार आया -"अरे वाह। बहुत अच्छा हुआ, अब मैं अपने जीवन को और बेहतर बनाने की कोशिश करूंगा। परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर सकूंगा।"

दूसरे को विचार आया -"ओह बस इतनी ही तनख्वाह बढ़ी इतनी-सी बढ़त में मेरा क्या होगा? महंगाई तो आसमान छुए जा रही है।"

ऊपर दिए गए उदाहरण से आपको ये समझना है कि घटना और घटना के प्रति आपके मन में उत्पन्न होने वाले विचार कैसे हैं।

आप अपने विचारों से स्वयं ये मान लेते हैं कि जो घटना हुई वह अच्छी है या बुरी।

एक विचार आप में खुशी की उमंग के साथ-साथ नया जोश भर देता है, वहीं दूसरा विचार आपके मन की निराशा को व्यक्त करके, सुख को दुख में बदल देता है।

अब यह आपको तय करना है कि किस विचार को अपने साथ रखना है और किस विचार को दूर रखना है।

अगर आपके मन में विचलित करने वाले विचारों के बादल मंडरा रहे हों, भावनाओं के तूफान उथल-पुथल मचा रहे हों तो उन्हें शुद्ध भाव और सजगता से देखकर दूर करें, ना कि उन्हें अपने आप पर हावी होने दें। यदि हर मुहल्ले में मुट्ठी भर लोग भी सकारात्मक सोच को अपना ले तो जीवन में चेतना के स्तर का विस्तार होगा। सुख सुविधाओं के इस युग में जो असली प्रेम, आनंद और शांति खो रही है, वह सकारात्मक सोच के साथ वापस पाई जा सकती है। तो आइए, आप और हम मिलकर सकारात्मकता की दुनिया में शामिल होकर अपने तथा विश्व में प्रेम, आनंद और शांति की नई ज्योत जगाएं।



डॉ. मीनाक्षी

सहायक प्राध्यापक

कालिंदी महाविद्यालय (नॉनकॉलेज)

मेरी तो आप ही हो दुनिया मेरे पापा



उंगली पकड़कर चलना सिखाया,
हमारे हर सपने को अपना बना लिया।
जीवन की हर मुश्किल में हाथ जिसने थामा,
और यूं ही बनता गया हर मुश्किल में एक
खुशनुमा लम्हा।
रिश्तों को अच्छे से निभाना,
मुश्किल वक्त में कभी ना डगमगाना।
अच्छी शिक्षा और ज्ञान दिया आपने,
और सिखाया-भलाई है हर रिश्ते में गलती को
प्यार से माफ करने में।
हर लड़की को सबसे प्यारा होता है अपना
बाबुल,
इसलिए इससे जुड़े हर रिश्ते को बड़े प्यार से
कर लेती है कबूल।
सिखाया आपने, कि बेटी कभी ना खोइयो
अपना आपा,
अरे! मेरी तो आप ही हो दुनिया मेरे पापा।।



अंकिता
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष

काश जिंदगी एक किताब होती



काश, जिंदगी सचमुच किताब होती
पढ़ सकता मैं कि आगे क्या होगा?
क्या पाऊँगा मैं और क्या दिल खोयेगा?
कब थोड़ी खुशी मिलेगी, कब दिल रोयेगा?
काश, जिंदगी सचमुच किताब होती,
फाड़ सकता मैं उन लम्हों को
जिन्होंने मुझे रुलाया है..
जोड़ता कुछ पन्ने जिनकी यादों ने मुझे
हँसाया है...
खोया और कितना पाया है?
हिसाब तो लगा पाता कितना
काश, जिंदगी सचमुच किताब होती,
वक्त से आँखें चुराकर पीछे चला जाता..
टूटे सपनों को फिर से अरमानों से सजाता
कुछ पल के लिये मैं भी मुस्कुराता,
काश, जिंदगी सचमुच किताब होती।



प्रिया कुमारी
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष

जल है जीवन का आधार



जल है जीवन का आधार, इसको न फैंको बेकार।
जल से ही सब जीवन पाते, जल बिन जीवित न रह पाते।
जल को फिर क्यों व्यर्थ बहाते, बात सरल-सी समझ न पाते।
बदल भाप अम्बर में जाता, मेघों के घर में भर जाता।
वर्षों में धरती पर आता, धरती से अम्बर तक जाता।
यही निरंतर चलता रहता, यही जलचक्र कहलाता।।



नेहा
बी. ए. प्रोग्राम
प्रथम वर्ष



पूछता है जब कोई मुझसे, कि दुनिया में मोहब्बत बची है कहाँ।
मुस्कुरा देती हूँ मैं, और याद आ जाती है माँ।।
माँ तेरे दूध का कर्ज़, मुझसे अदा क्या होगा।
तू है नाराज़ तो खुश मुझसे खुदा क्या होगा।।
जिस के होने से मैं खुद को मुकम्मल मानती हूँ।
मेरे रब के बाद मैं बस अपनी माँ को जानती हूँ।।
मंज़िल दूर और सफर बहुत है, छोटी सी ज़िंदगी की फ़िक्र बहुत है।
मार डालती ये दुनिया कब की हमें, माँ तेरी दुआओं में असर बहुत है।।



एकता
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष

नारी का सम्मान



उनके पहनावे पर करें विचार लोग,
खड़े हैं उस मोड़ पर फिर चार लोग।
आज फिर इनसे बचके जाना है
नारी है ना उसे अपना सम्मान बचाना
है।।



सहमी-सहमी पथ काटे वो
अपने हौंसलो को टुकड़ों में बांटे वो।
और रख थोड़ा हौंसला हाथों में
बाबुल का मान बढ़ाना है।
नारी है ना इसे अपना सम्मान बचाना
है।।



कितनी भी कठिन हों डगर,
हारेगी नारी नहीं मगर।
प्रेम है उसे अपने सपनों से
उसे सफलता से सजाना है।
नारी है ना उसे अपना सम्मान बचाना
है।।



एकता
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष

"जगत जननी नारी"



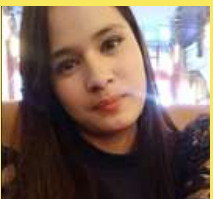
उतारो मुझे जिस क्षेत्र में
सर्वश्रेष्ठ कर दिखाऊँगी,
औरों से अलग हूँ दिखने में
कुछ अलग कर के ही जाऊँगी।
चाह नहीं है एक अलग नाम की
इसी को महान बनाऊँगी,
नारी हूँ मैं इस युग की
नारी की अलग पहचान बनाऊँगी।
जो सदियों से देखा तुमने
लिपटी साड़ी में कोमल तन को,
घर-घर में रहती थी वो
पर जान न सके थे उसके मन को।
झुकी हुई सी नज़रें थी
वाणी मध्यम मधुर-सी थी,
फिर भी तानों की आवाज प्रबल थी
हिम्मत न थी उफ़र करने की।
अब बदल गयी है ये पहचान
नारी की न साड़ी परिभाषा,
वाणी अभी भी मध्यम मधुर-सी
पर कुछ कर गुजरने की है, प्रबल-सी आशा।
चाहे जो भी मैं बन जाऊँ
गर्व से नारी ही कहलाऊँगी,
चाहे युग कोई सा आये
मैं ही जगत जननी कहलाऊँगी।
दुनिया के इस कठिन मंच पर
एक प्रदर्शन मैं भी दिखलाऊँगी,
कठपुतली नहीं किसी खेल की
अब स्वतंत्र मंचन कर पंचम लहराऊँगी।



प्रिया कुमारी
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष

हे आसमां

जब भी तुझे देखती हूँ
तो अपना सा लगता है।
दूर भी बहुत है तू
मगर आँखों में हमेशा बसता है।।
कितना बड़ा दिल है तेरा
जो सारे पंछी उड़ते हैं तुझमें।
किसी को तो बताया कर
ऐसी क्या बात है तुझमें।।
हर बातें तुझे बताई है मैंने
तू भी कुछ बताया कर।
अब अकेले बोला नहीं जाता
कुछ तो साथ दिया कर।।
ये दुनिया अब बहुत सताती है
सब लोग स्वार्थी है।
तू ही एक सहारा है मेरा
हर पल अब तेरी ही याद आती है।।
पता नहीं क्यों खामोश है इतना
कुछ तो तेरे भी राज़ होंगे।
समझना चाहती हूँ तुझे
बस तू समझने का मौका देना।।
भूल जाता है तू मुस्कुराना
सारे गम तूने छुपा लिए।
अब बरसो होने को आए है
हे आसमां, तू भी कभी मुस्कुरा
देना।।



पूनम गुसाईं
बी. ए. प्रोग्राम
प्रथम वर्ष

मंज़िल की तलाश

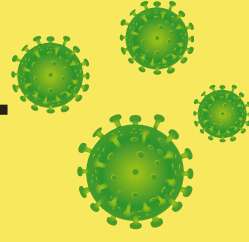


अंधेरो में खोए उजाले की तलाश है,
मंज़िल तो पता है पर साहिल ही लापता
है।
सपनों से सजी दुल्हन को उसकी असली
मंज़िल तक पहुंचाना है,
पर इन असीम रास्तों ने मंज़िल को ही
धुंधलाया है।
चाह है कि छू लूं ये आसमां,
पर बादलों ने ही भरमाया है।
अपने सपनों की डोली को ना ओझल
होने देना है,
बादलों को चीर के इन्द्रधनुष-सा दिखना
है।।



पूणिमा श्रीवास्तव
बी.कॉम प्रोग्राम
द्वितीय वर्ष

कोरोना

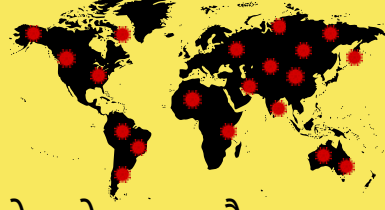


ऐ कोरोना हमसे तुम डरो ना

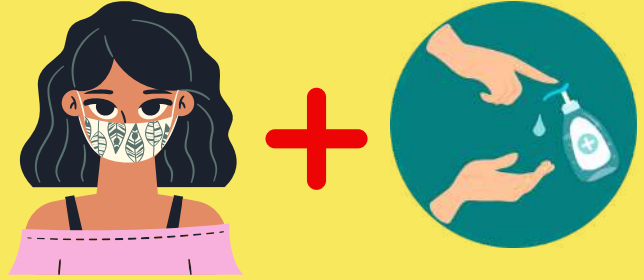


ऐ कोरोना हमसे तुम डरो ना,
हम चीन नहीं, हम पाक नहीं,
हम भारत के नवाब हैं।
मेरा कुछ नहीं जाएगा,
तेरा काम तमाम है।
जहाँ मोदी जैसे मंत्री
वहीं डॉक्टर मेरे भगवान हैं।
वहाँ तू क्या कर पाएगा
जहाँ 24 घंटे पहरा देती पुलिस तैयार है।
ऐ कोरोना हमसे तुम डरो ना
इस दुनिया से जल्दी मरो ना।।

कोरोना को है हराना



कोरोना ने मचाया कैसा कहर,
मनुष्य, जानवर, पक्षी सभी पर दिखने लगा
असर।
माना कि बाहर जाना ज़रूरी है,
मगर मास्क, सेनेटाइजर के साथ ज़िंदगी सुरक्षित
है।



कोरोना से हमको नहीं घबराना है,
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है।
अब तो हम सभी का एक ही है नारा,
कोरोना को है हराना, कोरोना को है हराना।



तन्त्रू टकराल
बी. ए. प्रोग्राम
प्रथम वर्ष

तरन्नुम
बी. ए. प्रोग्राम
प्रथम वर्ष



खुश हूँ

जिंदगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ।
काम में खुश हूँ, आराम में खुश हूँ।
आज पनीर नहीं, दाल में ही खुश हूँ।
आज गाड़ी नहीं, पैदल ही खुश हूँ।
दोस्तों का साथ नहीं, अकेला ही खुश हूँ।
आज कोई नाराज है, उसके इस अंदाज से ही खुश हूँ।
जिस को देख नहीं सकता, उसकी आवाज से ही खुश हूँ।
जिसको पा नहीं सकता, उसको सोच कर ही खुश हूँ।
बीता हुआ कल जा चुका है, उसकी मीठी याद में ही खुश हूँ।
आने वाले कल का पता नहीं, इंतजार में ही खुश हूँ।
हँसता हुआ बीत रहा है पल, आज में ही खुश हूँ।
जिंदगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ।



देवांगशी चक्रवर्ती
बी. कॉम प्रोग्राम
द्वितीय वर्ष



कौन होती है नारी ?



कभी बहु तो कभी बेटी बनकर, घर की रौनक बढ़ाती है,
तो कभी माँ या पत्नी बनकर, सबकी खुशियों के लिए अपनी खुशियाँ भूल जाती है।
जिसने बदले में कुछ नहीं चाहा, अक्सर उसका ही लोगो ने फायदा उठा लिया।
कभी दहेज तो कभी हवस का शिकार बनाते है उसे,
अपनी इच्छा के अनुसार पैदा होने से भी रोक देते है उसे।
जिसकी वजह से ये सृष्टि आगे बढ़ती है, केवल उसकी ही खुशी के लिए ये दुनिया क्यों पीछे रहती है।
जो सबकी तकलीफों को सहती है, सिर्फ उसके हिस्से में ही क्यों इतनी तकलीफ होती है।
ऐ नारी! तू क्यों डरती है इन लोगो से, जो अपनी इच्छाओं के लिए तेरा ही उपयोग करते हैं।
क्या तू भूल जाती है अपनी शक्ति को ?
तू अगर देवी है, तो काली, दुर्गा, चंडी का भी रूप ले सकती है।
जो दूसरो के लिए अपना पूरा जीवन निकाल दे,
वही होती है नारी, वही होती है नारी।।



रुकसार
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष

लक्ष्य

आज सुनाऊ मैं तुम्हें जीवन का सार,
बिन सपने बिन लक्ष्य के सुना हैं संसार,
ना थामी जिसने कलम ना उठाई दावत,
वो क्या समझे क्या होता हैं ख्वाब।

हृदय के गहराइयों से जो, पाना चाहूँ हर बार,
खुली आँखों से देख जिसे सजाऊँ अपना
संसार।

देख जिसे जी चाहे लिखना खुद अपनी तकदीर,
ऐ बंदे चल बदल दे अपने हाथों की लकीर।

है हौंसला तुझमें अगर बदलने का इतिहास,
ना जाने कब मेहनत की राह से बन जाएँ तू
खास।

सौ जन्मों में पाई मनुष्य योनी एक बार,
कर्म करता चल ना कर इस अवसर को बेकार,

व्यक्ति यदि लक्ष्यहीन, तो जीवन हैं अर्थहीन,
बिन राह के पथिक चलता जैसे, बिन लक्ष्य के
जीवन वैसे।

हर पल हर क्षण छूना चाहूँ आसमान,
माना पाना अपने लक्ष्य को ना हैं आसान,

रातों की अपनी नींद गवाई, फिर भी सफलता
ना पाई,
तो क्या हुआ जो हार गई, लिखूंगी इस बार एक
नई कहानी।

लक्ष्य को पा करके जीवन सफल बनाऊँगी,
फिर अपनी रीत नई चलाऊँगी।

माँ कहती हैं रख हौंसला,
जीतेगी इस बार ले ये फैसला,

बेटा-बेटी में ना करते भेद, ना करते पिंजरे में
केंद,

दिए स्वंत्रता के पंख मुझे, ना किया कोई खेद,
बेटी नहीं बेटे से कम दिए यही संदेश,

इसे माँ-बाप की मेहनत सफल बनाऊँगी,
पाकर अपना लक्ष्य उन्हें मैं दुनिया घुमाऊँगी।



तनु दीक्षित
बी. ए. प्रोग्राम
द्वितीय वर्ष

आज की नारी



जी हाँ, आज की नारी हूँ मैं
दर्पण हूँ; व अक्स भी मैं,
झुका सके, वो शक्स नहीं
स्वाभिमानी हूँ व आत्मनिर्भर भी
टूट के बिखर जाऊँ अब वो वक्त नहीं।

जननी हूँ, देवी भी मैं
जीवन हूँ, शक्ति भी मैं
सशक्त हूँ और साकार भी मैं
कमजोर नहीं, आज की नारी हूँ मैं।

नहीं समझना आधी अधूरी
नहीं अधूरी, मैं हूँ खुद में पूरी
सामान अधिकार की हकदार हूँ
स्त्रीवादी हूँ, लेकिन पुरुष विरोधी नहीं
जी हाँ आज की नारी हूँ मैं।

रुकना नहीं, बहुत आगे है जाना
खुद की पहचान है बनाना
नहीं चाहिए किसी का साथ
बस काबिल है खुद को बनाना
मुस्कुराकर, दर्द भुलाकर।

रिश्तों में बंधी है दुनिया सारी
हर पग को रोशन करने वाली वो शक्ति हूँ
जी हाँ आज की नारी हूँ मैं

रुकना नहीं ! झुकना नहीं !
डरना नहीं ! पीछे हटना नहीं !
आज की नारी हूँ, बेबस और अबला नहीं।



सोनाली
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष

खुली किताब हूँ



खुली किताब हूँ
कोई राज नहीं ...मुझमें
ये साँवला रंग किसी मेकअप का मोहताज
नहीं मुझमें,

खूबसूरत हूँ, क्योंकि रूह है मेरी खूबसूरत
किसी बाहरी आवरण की सूरत का कोई
एहसास नहीं मुझमें।



तबस्सुम अंसारी
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष

व्यक्तित्व इंसान का आईना होता है

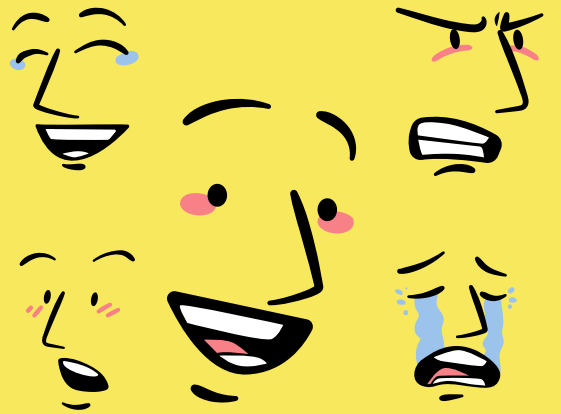
व्यक्तित्व इंसान का आईना होता है।
समय समय पर बिगड़ता बनता है,
कभी-कभी किसी की चाह में निखरता है।
व्यक्तित्व इंसान का आईना होता है।
एहसास दिलाता है हमें कि हम क्या है,
क्या खूबियाँ और क्या खामियाँ हैं,
कितनी हम में अच्छाइयाँ व कितनी बुराइयाँ हैं।
व्यक्तित्व इंसान का आईना होता है।



समाज में हमारी पहचान दिलाता है,
नए-नए लोगों से मिलाता है।
कुछ पाने की चाह में कभी हद से आगे गुजर जाता है,
तो कभी डर के मारे भीगी बिल्ली बन जाता है।
व्यक्तित्व इंसान का आईना होता है।

कभी भावनाओं का समुद्र अपने अन्दर समेट लेता है,
तो कभी ज्वालामुखी बन के फूट पड़ता है।
व्यक्तित्व इंसान का आईना होता है।

कभी जाने-अनजाने किसी का दिल दुखाता है,
कभी बिना वजह ही लड़ जाता है।
कभी अकेले में ही खुद को बहलाता है,
कभी दूसरों से मिलने की चाह रखता है।
व्यक्तित्व इंसान का आईना होता है।



शीतल
बी. ए. प्रोग्राम
प्रथम वर्ष

मेरा परिवार

कई रातों की नींद खराब कर जिसने मुझे बड़ा किया है
वो माँ ही है,
जिसने मुझे ढेर सारा प्यार दिया है।



मेरी ख्वाहिशों को जो अपनी जरूरत समझते हैं,
मेरे पापा..... ही है,
जो बिन कुछ कहे मेरे सपने पूरे करने में लगे रहते हैं।

मेरी समस्याओं को सुलझा कर मुझे अच्छा इंसान बनाया है।
मेरे गुरु..... ही है,
जिन्होंने मुझे सही रास्ता दिखाया है।



एक काम कहकर चार काम याद दिला देगी
वो बहन..... ही है,
जो एक बार कहने पर ही सब कुछ दिला देगी।

वो कहता नहीं मुझसे पर सब – कुछ जानता है।
वो भाई..... ही है, जो हर
गलतियों पर पर्दा डालता है।



कोई मेरे हार पर बड़े खुश नजर आते हैं,
वो मेरे दोस्त ही हैं,
जो हर वक्त मेरा साथ देने चले आते हैं।

कैसे कह दूँ सखियों कठिनाइयों में अकेले लड़ी हूँ मैं ॥

जबकि मेरे हर कदम पे साथ खड़ा मेरा ये परिवार होता है।



श्रुति झा
बी. कॉम प्रोग्राम
द्वितीय वर्ष

हिंदी टी. वी. सीरियल में नारी की बदलती हुई छवि

हिंदी सीरियल्स अपने प्रारंभ से ही समाज में स्त्री की स्थिति और समय के साथ उसकी बदलती भूमिका, उसकी चुनौतियों को सकारात्मक व लगभग आदर्श रूप में प्रस्तुत करते रहे हैं। सीरियल्स में आरंभ में महिलाओं की ऐतिहासिक, पौराणिक स्थिति को पारंपरिक आदर्शों के साथ प्रस्तुत किया गया है। कुछ पुराने सीरियल्स में समाज में व्याप्त बुराइयों को दिखाया गया था। हिंदी टी. वी. सीरियल्स समाज को बदलने का एक प्रमुख माध्यम है, क्योंकि सीरियल्स में वही दिखाया जाता है जो समाज में घटित हो रहा होता है।

हम कुछ सीरियल्स के आधार पर समाज में स्त्री की भूमिका को दर्शाएंगे:-

- 'बालिका वधू' सीरियल में उस समय के समाज की बुराई को दिखाया गया था कि उस समय कम उम्र में ही विवाह कर दिए जाते थे और बच्चों को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, खासकर लड़कियों को। और जब उनके विवाह हो जाते थे और कुछ समय बाद ही उनके पति की मृत्यु हो जाती थी तो उन्हें विधवाओं वाला जीवन बिताना पड़ता था किन्तु अब समय बदल रहा है अब बाल विवाह को रोका गया है और विधवा विवाह को भी सरकार की तरफ से मान्यता दी जा चुकी है।
- 'रानी लक्ष्मी बाई' सीरियल में स्त्री की स्थिति कुछ सुधार के साथ दिखाई गई है, जिसमें वह पतिव्रता भी है और अपनी जनता को अंग्रेजों से बचाने के लिए खुद उन से लड़ने के लिए तैयार भी हो गई। पति की मृत्यु के बाद भी वह अपनी जनता और अपनी स्वतंत्रता के लिए उनके सामने नहीं झुकी।
- 'अनुपमा' सीरियल में भी स्त्री के इसी स्वतंत्र रूप को ही दिखाया गया है जिसमें उसने पहले तो अपने परिवार के लिए अपने सपनों और आकांक्षाओं को दबा दिया किन्तु जब उसे लगा कि उसके ऐसा करने पर भी किसी को कोई फर्क नहीं पड़ा तो उसने अपना जीवन अपने हिसाब से चलाने की ठान ली। तथा बिना किसी की सहायता के अपने पैरों पर खड़ी होकर अपना जीवन जीना आरंभ किया।
- 'मैडम सर' सीरियल अब का आधुनिक रूप है। जिसमें महिलाओं को पुरुषों के बराबर समझा जाता है तथा महिलाओं को पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने की स्वतंत्रता है।
- 'जात न पूछो प्रेम की' सीरियल में भी समाज में हुए बदलाव को दिखाया गया है। इसमें नायक नायिका अलग अलग जाति से संबंध रखते हैं और उन दोनों के बीच प्रेम की भावना जागृत हो जाती है, उस समय में यदि कोई लड़की किसी दूसरी जाति के लड़के से प्रेम करती है तो उसकी सजा लड़कियों को ही दी जाती थी और कभी-कभी उन्हें मार भी दिया जाता था, किन्तु अब ऐसा नहीं है उस सीरियल के माध्यम से हमें ये संदेश मिला कि दुनिया में इंसानियत नाम की भी कोई चीज होती है और ऊपरवाले ने सब को एक जैसा ही बनाया है और ये जाति तो इंसानों ने ही बनाई है।

इन सभी हिंदी सीरियलों के माध्यम से बताया गया है कि अब हमारा समाज बदल गया है और अब महिलाओं की स्थिति पुरुषों के समान ही है तथा इन्हीं के माध्यम से समाज की बुराइयाँ भी दूर होती जा रही हैं।

रुकसार

बी. ए. प्रोग्राम

तृतीय वर्ष



कहानी - क्रोध करना अच्छा नहीं होता

एक बार की बात है, एक बच्चे को बहुत गुस्सा आता था, वह गुस्सा करते वक्त किसी के बारे में नहीं सोचता था बस जो मन में आए, बोल देता था। एक दिन उसके पिता ने उसे बुलाया और कहा –“तुम एक खेल खेलोगे?”

तभी बच्चे ने कहा - “हाँ हाँ ज़रूर खेलूंगा, बताओ क्या करना होगा मुझे?”

पिता ने उत्तर दिया - “बरामदे में एक लकड़ी की दीवार है, तुम्हें बस इतना करना है कि जब भी तुम्हें गुस्सा आए तुम यहाँ आना और एक कील उस दीवार में ठोक देना”। (पिता ने कुछ कील वहीं पर रख दी)

बच्चे ने वैसा ही किया। पहले दिन तो उसने आधे दर्जन से भी ज्यादा कील खत्म कर दी, और धीरे-धीरे वह जब भी उसे गुस्सा आता यही करता। फिर एक दिन ऐसा भी आया जब उसने एक भी कील नहीं ठोकी, वह इससे काफी खुश हुआ और उसने अपने पिता को ये बात बताई।

पिता ने खुश होकर उसे शाबाशी दी और कहा - “अब जब कभी तुम्हें गुस्सा आए तो इन कीलों को वापस निकाल देना, और जैसे ही सारे निकल जाए मुझे बता देना”।

बच्चे ने अगले दिन से ऐसा ही किया, जब भी उसे गुस्सा आता वह आकर इन कीलों को निकालता। वह ऐसा हर रोज़ करता, फिर एक दिन उसने सारे कील निकाल दिए। और अपने पिता को बताया इस उम्मीद में कि वे आकर उसे फिर शाबाशी देंगे।

पिता आए और उसे शाबाशी देते हुए कहा - “बहुत अच्छे बेटे, तुमने बहुत अच्छा काम किया। पर अब ये बताओ कि क्या तुम्हें यहाँ ये निशान दिख रहे हैं जहाँ से तुमने कील निकाले?”

बेटे ने कहा- “हाँ काफी ज़्यादा है।”

पिता ने कहा - “ ये वो निशान है जो हर किसी के दिल में छोड़ जाते है जब तुम किसी पर गुस्सा करते हो। हालांकि ये निशान तो मिट जाएंगे किंतु जो लोगो के दिलों में भावनाएँ होंगी वह कभी नहीं मिट पाएँगी”।

बेटे को समझ आया कि वे कितना गलत करता था और उसने अपने पिता से वादा किया, कि वे अब कभी भी किसी पर क्रोध नहीं करेगा।

शिक्षा :- गुस्सा चाहे तुम्हारे मन की अशांति को मिटाता है, पर वह तुम्हारे अपनों के साथ के रिश्ते को कहीं न कहीं कमज़ोर भी कर देता है। तो जितना हो सके क्रोध ना करें और शांति के साथ मिल-जुल कर रहें।



अंकिता
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष

रेल का पहला सफर वाराणसी तक

किसी भी यात्रा का एक अपना अलग ही सुख होता है। मेरा पहला सफर मुझे हमेशा यादगार रहेगा वैसे तो यात्रा के अनेक उपलब्ध साधनों में से रेल यात्रा एक अनोखा और रोमांचक अनुभव होता है।

यह बात कुछ साल पहले की है, जब मैं नौवीं कक्षा में थी। हम सब परिवार एक साथ वाराणसी जा रहे थे। मेरे पिताजी ने सभी की रिजर्वेशन टिकट कराई थी।

जैसे ही टिकट की सूचना मुझे मिली मेरी प्रसन्नता की सीमा ना रही। इससे पहले मैंने रेल यात्रा के बारे में सुना ही था।

रात्रि 10:00 बजे हम नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए थे। स्टेशन की इमारत और भागते दौड़ते तरह-तरह के लोग बहुत सारे कुली यात्रियों का सामान उठाने के लिए उनके पास जा रहे थे।

हमारे पास भी एक कुली आया और हमारा सामान उठाकर प्लेटफार्म की ओर चलने लगा। हमारी रेल आ गई थी। हम अपनी सीट पर बैठ गए थे। वहाँ 3 बर्थ थे मैं कभी ऊपर जाती और कभी नीचे आती, हमारी रेल वाराणसी के लिए चलने लगी। मन कर रहा था कि पूरी रेल के कोच में यहाँ से वहाँ घूमूं। हम सब ने खूब बातें की खाना खाया और मस्ती की।

बातें करते-करते कब 1:00 बज गया पता ही नहीं लगा धीरे-धीरे सब अपनी सीट पर लेट गए और सोने लगे पर पता नहीं मुझे कैसी उत्सुकता। थी मैं पूरी रात जाग रही थी और खिड़की से बाहर देख रही थी। जैसे-जैसे ट्रेन चल रही थी, जहाँ-जहाँ ट्रेन रुक रही थी स्टेशन के वह नजारे मुझे बहुत लुभा रहे थे।

देखते-देखते पता ही नहीं चला कब आँख लग गई और सीधा आँख सुबह खुली हम वाराणसी स्टेशन पर पहुंच गए थे। वाराणसी स्टेशन पर पहुंच कर हमने टैक्सी की और फिर हम अपने होटल में आ गए।

अगले दिन हम वाराणसी भ्रमण के लिए निकल गए वाराणसी अपने घाटों और गलियों के लिए बहुत प्रसिद्ध है, वहाँ के हर एक घाट के बारे में मैंने पहले ही गूगल पर सर्च कर लिया था। हमने सुबह का खाना वहाँ के प्रसिद्ध होटल में खाया था। जहाँ का दक्षिण भारतीय भोजन बहुत लोकप्रिय है।





फिर हम काशी विश्वनाथ मंदिर की ओर निकल गए वहाँ से हमने एक टैक्सी करी थी। रास्ते में अनोखी छोटी दुकानें, बाहर सड़कों में बैठी औरतें जो कि तुलसी के पत्ते बेच रही थी। वह छोटी से छोटी दुकानें जिसके अंदर पान बेचे जा रहे थे।

मंदिर का रास्ता गली से होते हुए जा रहा था जो कि एक आम गली नहीं थी। उस गली का नाम था विश्वनाथ गली जो मंदिर से जुड़ी है। उस गली में जाते ही हमें बहुत सी दुकानें मिली जहाँ पर पूजा का सामान बेचने वाली दुकानें, फूलों की दुकानें और सामान रखने आदि की दुकानें थी। हमने काशी विश्वनाथ जी के दर्शन करें और बाहर दूसरी गली जो उसी से जुड़ी हुई थी। जो थी कचोरी वाली गली उसकी ओर चल दिए वह गली अपनी कचोरी के लिए बहुत लोकप्रिय थी। उस गली में कचौड़ी की दुकानें, समोसे, चाट आदि, इन सब की दुकानें थी।

चाट पकौड़ी खा कर हम लोग, ठठेरी बाजार घूमने गए जहाँ पर बर्तन बनाए जाते हैं। वहाँ कि इन गलियों की बहुत महत्वपूर्णता थी।

अगले दिन हम लोग वहाँ के घाटों पर घूमने गए थे। जहाँ लगभग 100 घाट है जिसमें से 5 बहुत पवित्र घाट माने जाते हैं। जैसे कि अस्सी घाट, दशमेश घाट, केशव घाट, पंचगंगा घाट और मणिकर्णिका घाट।

वहाँ घाटों के पास काफी नावे खड़ी थी। जिसमें यात्री बैठ कर उन सारे घाटों को घूमते हैं। हमने भी एक नाव की और हम सारे घाटों पर घूमने के लिए निकल गए। उस घाट की एक अलग विशेषता है, जिसको वहाँ के लोग बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं।



शाम को वहाँ घाटों पर आरती हुआ करती है। हमने शाम को माँ गंगा की आरती ली, वह पावन आरती मन को बहुत लुभाई, मंत्रों की गूंज मन को शांत कर रही थी, और मन कर रहा था, बस वहाँ बैठकर उस नजारे को उस अनुभव को हमेशा देखते रहे।

अगले दिन हम लोग वहाँ के प्रसिद्ध मंदिरों में गए जो कि छोटे से छोटा मंदिर बड़े से बड़े मंदिर होते हैं। हम वहाँ की गलियों में घूमे जहाँ पर पुराने घर थे, पुराने महल थे। वहाँ की एक बात बहुत महत्वपूर्ण थी और बहुत चौंकाने वाली भी थी कि वहाँ का खाना बहुत सस्ता था और बहुत स्वादिष्ट भी था। वहाँ तुलसी का अलग महत्व है। वहाँ जो चाय मिलती है वह भी तुलसी की चाय मिलती है।

वाराणसी पूरा घूम के हम अगले दिन स्टेशन के लिए निकले। स्टेशन पर पहुंच कर हमने अपनी ट्रेन का इंतजार किया स्टेशन पर हमारी ट्रेन आ चुकी थी। वहाँ से हम दिल्ली के लिए ट्रेन में बैठ गए और ट्रेन का वह रोमांचक अनुभव लेते हुए हम दिल्ली आ गए।

यह सफर मेरे लिए बहुत यादगार रहा, जब मैंने अपनी पहली रेल यात्रा की, वह भी वाराणसी जैसी पावन जगह के लिए। जहाँ की हर गलियों, मंदिरों, घाटों का अलग महत्व था और अपनी ही अलग सुंदरता थी।

यह था मेरा रेल का पहला सफर वाराणसी तक।



**प्राची कुमार
बी. ए. प्रोग्राम
तृतीय वर्ष**



नारी की बढ़ती उड़ान



नारी शब्द का महत्व बहुत है सबके जीवन में, कभी माँ, तो कभी बहन, कभी पत्नी, तो कभी बेटी या बहु बनकर। 19वीं शताब्दी में नारियों के साथ काफी अत्याचार हुए तथा उन्हें काफी पीड़ा सहन करनी पड़ी। इस शताब्दी में सती प्रथा, बाल विवाह आदि जैसी कुरीतियों का सामना करना पड़ा। फिर इसके खिलाफ काफी लोगो ने आवाज़ उठाई। जैसे- बी.आर. अम्बेडकर, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फूले, सर सैय्यद अहमद खां आदि। इन सभी ने स्त्रियों की स्वतंत्रता व अधिकार के लिए आवाज़ उठाई। फिर धीरे-धीरे समय बदलता गया और आधुनिक काल का समय आया। जब स्त्रियों ने अपने स्वयं के लिए आवाज़ उठानी शुरू की। वह अब पुरुषों की तुलना करने लगीं हैं। तथा अब स्त्री किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है (जैसे:- डॉक्टर, इंजीनियर, ट्रक-ड्राइवर या कोई अन्य क्षेत्र)। टी.वी. सीरियल में भी अब स्त्रियों को मिसाल के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। जैसे अनुपमा (सीरियल), सई (गुम है किसी के प्यार में), संध्या (दिया और बाती हम) आदि। यदि नारी की स्थिति ऐसे ही बढ़ती रही तो एक दिन नारी पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो जाएगी।



अंकिता

बी. ए. प्रोग्राम

तृतीय वर्ष

लड़कियाँ

कभी माँ, कभी बेटी, कभी बहन और भी कई नामों से जानी जाती हैं लड़कियाँ। लाख दुःख और जुल्म सहकर भी अपना फ़र्ज़ निभाती हैं लड़कियाँ। 'ये तो पराई हैं या पराये घर से आई हैं' कई बार ऐसे भी बुलाई जाती हैं लड़कियाँ। ऐसे कपड़े मत पहनो, ऐसे मत बैठो, इतनी ज़ोर से मत बोलो, ऐसे ही कई बातों पर टोकी जाती हैं लड़कियाँ।

कई बार लड़कों द्वारा छोड़ें गए माँ-बाप को वृद्धा आश्रम से वापस लाकर अंतिम साँस तक अपने माँ-बाप का साथ निभाती हैं लड़कियाँ। थोड़ी-सी उड़ान तो दो उनको, विश्व सुंदरी 'मानुषी छिल्लर' या कैप्टन 'ज़ोया अग्रवाल' बन जाती हैं लड़कियाँ। घर की चिड़िया पुकारते हो तो पंख भी दो उन्हें। सचमुच बहुत ऊँची उड़ान भर जाती हैं लड़कियाँ।



शिवानी

बी. कॉम प्रोग्राम

द्वितीय वर्ष

देखो हँस ना देना (चुटकुले)

सुरभि:- रात में मोबाइल फोन को चार्ज मत किया करो मैंने सुना है कि वो फट जाता है।
शिल्पा:- चिंता मत करो मैंने बैटरी निकाल ली है।

साइंस टीचर:- क्लास में सो रहे हो क्या?

राजू :- नहीं टीचर गुरुत्वाकर्षण से सर नीचे गिर रहा है।

पहला दोस्त:- और सुना क्या हाल चाल है तेरे, क्या चल रहा है ज़िन्दगी में?

दूसरा दोस्त:- बस कुछ खास नहीं, बड़ों के आशीर्वाद, पत्नी के ताने,
दर्द भरे गाने, बाकी भगवान जाने।

रोहित :- एक बार स्कूल में ज़बरदस्ती गाना गाने के लिए मुझे खड़ा कर दिया।

नितिन :- फिर क्या हुआ?

रोहित :- फिर क्या, मैंने भी राष्ट्रगान गाकर सबको खड़ा कर दिया।

एक लड़का एग्जाम हॉल में परेशान बैठा था।

टीचर :- क्या हुआ बेटा? प्रश्न मुश्किल है क्या?

लड़का :- नहीं सर, मैं तो यह सोच रहा हूँ कि इस प्रश्न का उत्तर किस जेब में रखा है।



नेहा
बी. ए. प्रोग्राम
प्रथम वर्ष

अमीर खरीब महान बुढ़िया

गली से एक भिखारी गुजर रहा था, एक घर का दरवाज़ा खुला था और अन्दर एक बुढ़िया बैठी थी।

उसे देखकर भिखारी बोला :- "खाने के लिए रोटी दे दो अम्मा"

बुढ़िया ने कहा :- " रोटी तो अभी बनी नहीं है, बाद में आना।

भिखारी :- " ठीक है ये लो मेरा नंबर जब बन जाए मिस कॉल कर देना।"

ये सुन बुढ़िया के होश उड़ गए पर वो कहाँ कम थी, बोली :- "मिस कॉल क्या करनी,
जब बन जाएगी तो वाट्सएप पर डाल दूंगी वहीं से डाउनलोड करके खा लेना।"

ये सुन कर भिखारी बेहोश हो गया।



तनू टकराल
बी. ए. प्रोग्राम
प्रथम वर्ष

लालनगीतम्

उदिते सूर्ये धरणी विहसति।
पक्षी कूजति कमलं विकसति॥1॥

नदति मन्दिरे उच्चैर्ढक्का।
सरितः सलिले सेलति नौका॥2॥

पुष्पे पुष्पे नानारङ्गाः।
तेषु डयन्ते चित्रपतङ्गाः॥3॥

वृक्षे वृक्षे नूतनपत्रम्।
विविधैवणैर्विभाति चित्रम्॥4॥

धेनुः प्रातर्यच्छति दुग्धम्।
शुद्धं स्वच्छं मधुरं स्निग्धम्॥5॥

गहने विपिने व्याघ्रो गर्जति।
उच्चैस्तत्र च सिंहः नर्दति॥6॥

हरिणोऽयं खादति नवघासम्।
सर्वत्र च पश्यति सविलासम्॥7॥

उष्ट्रः तुङ्गः मन्दं गच्छति
पृष्ठे प्रचुरं भारं निवहति॥8॥

घोटकराजः क्षिप्रं धावति।
धावनसमये किमपि न खादति॥9॥

पश्यत भल्लुकमिमं करालम्।
नृत्यति थथथै कुरु करतालम्॥10॥



प्रिया कुमारी
बी. ए. प्रोग्राम
तृतिया वर्ष

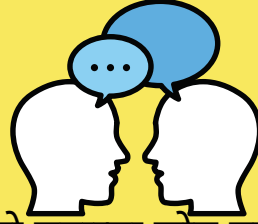
सूक्तय

१ पिता यच्छति पुत्राय बाले विद्याधनं महत्।
पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता॥1॥



अर्थ- पिता पुत्र को बचपन में महान् विद्यारूपी धन देता है। "पिता ने इसके लिये कितनी साधना की " यह कहना ही उनके प्रति पुत्र की कृतज्ञता है।

२ अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।
तदेवाहुः महात्मनः समत्वमिति तथ्यत ॥2॥



अर्थ - जैसी सरलता चित्त में है यदि वचन में हो तो महात्मा लोग वास्तव में उसे समानता कहते हैं।

३ त्यक्त्वा धर्मप्रदां वाचं परुषाम् योऽभ्युदीरेत्।
परित्यज्य फलं पक्वं भुङ्क्त्वेऽपक्वं विमूढधीः॥3॥



अर्थ- जो धर्म को प्रदान करने वाले वचन को छोड़कर कठोर वचन कहता है वह मूर्ख पके फल को छोड़कर कच्चे फल को खाता है।

४ विद्वांस एव लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।
अन्येषां वदने ये तु ते चक्षुर्नामानीमते॥4॥



अर्थ- इस दुनिया में विद्वान ही आँखों वाले जाने जाते हैं। दूसरे चेहरों पर जो आंखें हैं वे तो नाम की मानी जाती हैं ॥4॥



प्रीति
बी. ए. प्रोग्राम
तृतिया वर्ष

प्रेरणादायक श्लोक

1. दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यालंकृतोपि सन्।

मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः॥

दुष्ट व्यक्ति यदि विद्या से सुशोभित भी हो तो (अर्थात् वह विद्यावान भी हो तो) भी उसका परित्याग कर देना चाहिए जैसे मणि से सुशोभित सर्प क्या भयंकर नहीं होता?

2. विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभ्य सह।

अविद्यया मृत्युं विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥

जो भौतिक विज्ञान के साथ-साथ आध्यात्मिक विज्ञान भी, दोनों को जानता है, पूर्व से मृत्यु का भय अर्थात् उचित शारीरिक और मानसिक प्रयासों से और उत्तरार्द्ध अर्थात् मन और आत्मा की पवित्रता से मुक्ति प्राप्त करता है।

3. विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

ज्ञान विनम्रता प्रदान करता है, विनम्रता से योग्यता आती है और योग्यता से धन प्राप्त होता है, जिससे व्यक्ति धर्म के कार्य करता है और सुखी रहता है।

4. निश्चित्वा यः प्रक्रमते नान्तर्वसति कर्मणः।

अवन्ध्यकालो वश्यात्मा स वै पण्डित उच्यते॥

जिसके प्रयास एक दृढ़ प्रतिबद्धता से शुरू होते हैं जो कार्य पूर्ण होने तक ज्यादा आराम नहीं करते हैं जो समय बर्बाद नहीं करते हैं और जो अपने विचारों पर नियन्त्रण रखते हैं वह बुद्धिमान है।

5. हस्तस्य भूषणम दानम, सत्यं कंठस्य भूषणं।

श्रोतस्य भूषणं शास्त्रम, भूषणैः किं प्रयोजनम॥

हाथ का आभूषण दान है, गले का आभूषण सत्य है, कान की शोभा शास्त्र सुनने से है, अन्य आभूषणों की क्या आवश्यकता है।



**प्रिया कुमारी
बी. ए. प्रोग्राम
तृतिया वर्ष**

श्लोक

विद्यां ददाति विनयं विनयात् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम् ॥

अर्थ - विद्या यानि ज्ञान हमें विनम्रता प्रदान करता है विनम्रता से योग्यता आती है योग्यता से हमें धन प्राप्त होता है जिससे हम धर्म के कार्य करते हैं और हमें सुख प्राप्त होता है।

आलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।

अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम् ॥

अर्थ - आलसी को विद्या कहाँ, अनपढ़ मूर्ख को धन कहाँ निर्धन को मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ?

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥

अर्थ - मनुष्य के शरीर में रहने वाला आलस्य ही उनका सबसे बड़ा शत्रु होता है। परिश्रम जैसा दूसरा हमारा कोई अन्य मित्र नहीं होता क्योंकि परिश्रम करने वाला कभी दुखी नहीं होता।

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छाया समन्वितः।

यदि देवाद फलं नास्ति, छाया केन निवार्यते ॥

अर्थ - एक विशाल वृक्ष की सेवा करनी चाहिए। क्योंकि वह फल और छाया से युक्त होता है। यदि किसी दुर्भाग्य से फल नहीं देता तो उसकी छाया कोई नहीं रोक सकता है।

अनादरो विलम्बश्च वै मुख्यम निष्ठुर वचनम्।

पश्चतपश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि च ॥

अर्थ - अपमान करके देना, मुंह फेर कर देना, देरी से देना, कठोर वचन बोलकर देना और देने के बाद पछतावा होना। ये सभी 5 क्रियाएं दान को दूषित कर देती हैं।



स्वाति कुमारी
बी. ए. प्रोग्राम
तृतिया वर्ष

कीलोत्पाटि वानरकथा

अव्यापारेषु व्यापारं यो नरः कर्तुमिच्छति।

स एव निधनं याति कीलोत्पाटीव वानरः॥

एकस्मिन् ग्रामे कश्चन अतीव भक्तिमान् धनिकः आसीत्। सः सर्वदा पण्डितेभ्यः, निर्धनिकेभ्यः च धनसाहाय्यम् अकरोत्। सः एकदा देवालयस्य निर्माणाय तक्षकान् आयोजयत्। तेभ्यः तक्षकेभ्यः प्रभूतं धनम् अयच्छत्। एकदा तक्षकाः भोजनाय गन्तुम् उद्भुक्ताः आसन्। तदा तक्षकाः गमनात् पूर्वं छिन्नयोः काष्ठयोः मध्ये कीलकं स्थापयित्वा अगच्छन्। तदा कश्चन वानरः क्रीडनाय तत्र आगच्छत्। तत्र आगत्य काष्ठाभ्यां कीलकस्य उत्पाटनाय यत्नम् अकरोत्। यदा सः कीलकम् उद्पादयत् तदा तस्य शरीरस्य अर्धः भागः मध्ये पतितः। अन्ते सः मृतः

बन्दर और लकड़ी का खूंट

एक गांव में एक आदमी रहता था जो बहुत ही धार्मिक और धनवान था। उसने हमेशा विद्वान और गरीब लोगों की आर्थिक मदद की। एक बार उसने कुछ मजदूरों को मंदिर बनाने के लिए नियुक्त किया। और उन श्रमिकों को बहुत पैसा दिया। एक बार मजदूर दोपहर के भोजन के लिए जा रहे थे। जाने से पहले मजदूर लकड़ी के बीच लकड़ी की एक कील छोड़ गए.. उसी समय, एक बन्दर खेलने के लिए वहाँ आया था। वहाँ आने के बाद, उसने लकड़ी से कील निकालने की कोशिश की। जब उसने कील को बाहर निकाला, तो उसके शरीर का आधा हिस्सा लकड़ी के बीच में फस गया। अंत में उसकी मृत्यु हो गई।

अनावश्यक कर्मों में बिताया गया प्रयास बन्दर की मौत का एक मात्र कारण था।



स्वाति कुमारी
बी. ए. प्रोग्राम
तृतिया वर्ष

Teaching in the Time of COVID-19

The pandemic that has befallen us has disrupted our lives in more ways than one. Lives have become mere numbers, human touch a distant dream. The callousness of our elected few has shaken our faith in them. The constant images of burning pyre will remain etched in our memories for how long, we don't know. My life with my students has also undergone a complete overhaul. Never had I ever imagined holding regular classes for over a year without physically seeing their curious and happy faces. Who do we blame?

Classes filled with vibrant discussions have silenced, with fewer people attending lectures. It would be inhumane on my part to expect everyone to attend classes with all the carnage wreaking havoc in our lives. Even those students attending lectures make me question our education system. Digital device had never made a more glaring appearance in our lives. Poor internet connection and limited internet 'data' are more than inhibitors in pedagogy. They affect students as well as teachers. The lack of space at homes, be it for learning or teaching, has unsettled the pedagogic process. Students, primarily women, are expected to handle household chores. The blaring television, the screaming family members and more importantly the constant surveillance has hindered the flow of classroom discussion. Who do we blame?

I want students to know it is as difficult for teachers to teach as it is difficult for students to learn in these trying times. We are as tired as they are. It is as difficult for us to evaluate papers as it is for them to write and upload papers. We are as anxious as they are. I can only try to understand the pain of the graduating students who are missing out on their farewell and convocations. They have achieved a lot more than they give themselves credit for. So who do we blame?

But... a hope glimmers. A hope drives us through; a hope that we will sail through after we have lost much. I hope to physically see my students in our classroom. I will walk through the rows as we discuss everything under the sun. From political discussions to popular culture, everything awaits us. Students will enjoy doing papers and we will enjoy reading their answers, some innovative and some not-so-innovative. But yes, we will wait and hold tight till then.



Shibangi Dash
Assistant Professor (English)
Kalindi College (NCWEB)

CORONAVIRUS



Coronavirus has become a matter of concern, it has spread all over the world by turn. It is spreading rapidly, So don't wander happily. As lakhs of people are affected, And many have died. So in many countries lockdown has applied.



A virus started from Wuhan, Don't have any medical solution. To stop is required people's contribution. To prevent virus, follow the guidelines provided by government. And don't cut the wages of poor servants.

Old are the most sensitive, So don't panic and be positive. People are requested to be at their homes, Or conditions will become like Italy's capital Rome.



A virus that is spreading by touching, Has brought the people sadly reacting. People are thanking police and media staffs, For their new and innovative craft. So contribute to stop Covid 19, As it is continuously affecting from olds to teen.



Neha
B.A. Programme
1st year



THE EARTH



Water keeps me cool,
Tree brings a shade!
People are so cruel,
Selling water as trade!
Somewhere, my friends are lost,
Birds chirp, rivers sound.
That I like most!
Hmmm! Also remember about son,
That didn't know radiation gun!!
Please please plant tree,
Instead of industry!!
Otherwise, my beauty,
Will become a history!!



Neha
B.A. Programme
1st year

BE THE CHANGE YOU WANT TO SEE



Be what you want to be
Do what you want to see.
As there is no one responsible
For all your needs.
Stop blaming the world
Stop shouting to get the change.
If you really want change
Let it start with you.
Anyone can play the blame game
Can shout at others for
All their misdeeds.
But be your own master
As you are the one whom
You can be loyal with
So be the change you want to see.



Muskan
B.A. Programme
1st year



The Song of The Stars



Everyone is busy now a days,
As all are trying to follow the
craze.

Now we have become dumb
and blind,

Some one else is controlling
your mind .

Just wait and think once ,

You will get that we are
becoming a dunce.

We all are forgetting that we
are the master of ourselves ,
And no group can rule us by
becoming elves .

just sit alone in a dark night,
And try to forget about every
fight .

You only have to look at the
stars

And you will realize for peace
and comfort

You don't need a car .

Love yourself before anything
else,

As we are moving to our final
Bell.

MOTHER Star so large and bright
Sings a little song at night,
To her children large and small
This is what she tell them all,
Never grumble children mine,
Always keep your light a shine,
Don't forget that down below
Someone needs your little glow
And the brightness of your twinkle
May smooth out a tired wrinkle.
Twinkle brightly each small eye
Lighting up your patch of sky,
Always try to do your best,
God will see to all the rest.



Sejal
B.A. Programme
1st year



Ekta
B.A. Programme
3rd year



DAYS TEACH ME



Days teach me
To always dream
However, it may never come true
But that's the best way
To live life through
Days teach me
To dream so high
Never give up and always try
Never let go or say goodbye
Days teach me
That when there is darkness
For sure dawn is the next
And when everything is so tiring
For sure there would be time to rest
Days teach me
To always care for a friend
Always be true and never pretend
Always love with no end
And the broken hearts try to mend
Days teach me
Never to feel the hate
Always be confident and never
hesitate
Always believe in fate
Days teach me
That lovers meet & stay together
And others are apart

So if you are one who have been
left behind
Don't cry and suffer Just search
for a new start
Days teach me
The past I must forget
And nothing needs my regret
Days teach me
To open my heart and forgive
Cause that will help me to
survive and live
Days teach me
To always offer my helping
hand
And never doubt in people when
there is no proof
And always try to understand
Days teach me
Not to be shy
If I have done something wrong
But to admit it and be proud that
I have learned
A lesson that will help me to be
strong



Devangshi Chakraborty
B.Com Programme
2nd year

When All Hopes are Dead

When all hopes are dead
And life is so painful .
When everything has been taken
away
And eyes are so tearful .
Do not blame anyone
Accept life as it is .
With its sorrow and beauties .
When no effort seems to yield result
And each penny found's spent
When everyone around seems to be
far off
And stare in the sky too silent .
Try to smile
Even with tearful eyes ,
Try to create new things
Though everything dies .



Shaheen Khanam
B.Com Programme
3rd year



Akansha
B.Com Programme
3rd year

Woman Power

A Woman with a book
And a pen
Has the power
To move nations.



A woman with a mind
And a voice
Has the power
To change world.



UNDER THE HARVEST MOON



Under the harvest moon.
When the soft silver
Drips shimmering
Over the garden might's,
Death, the gray maker,
Comes and whispers to you
As a beautiful friend
Who remembers.

Under the summer rises
When the flagrant crimson
Lurks in the dusk
Of the wild red leaves,
Love, with little hand,
Comes and touches you
With a thousand memories,
And ask you
Beautiful unseverable Question



Sejal
B.A. Programme
1st year

THOUGHTS



Higher than a sky
Higher I can fly
Leave everything behind
I can still rise and shine.

Sometimes it's the very people
who no one imagines anything
of.....who do the things that no
one can

imagine!

Live to give, not to give up.

Expectations aren't always
meant to be met!



Situations don't change until we
do!



Love is always like the two
people on seesaw

When the one goes up
The other one has to go down



Ask, and it will be given you
Seek, and you will find



Sheryl Khurana
B.Com Programme
2nd year

Save Tree Save Life

As the sunlight burns the ground,
It's high time we take a look around.
The place which had lush green trees has been
replaced with multistoreys.
The small gardens where kids played,
Has been taken over by something man-made.



The flowers that made us feel fresh,
Have lost their ground to some wired mesh.
Those beautiful creepers hung on the window sill,
Don't exist now on the metal grill.
It's pathetic that we had no clue when the sky turned grey from blue.

How lost are we in our busy life,
Never noticed that our nature was at the edge of the knife.
We still have time, let's do something,
Let's leave behind cooler earth, not burning.
Come let's pledge, let's plant a tree,
Let's vow to free the world from pollution's misery.
As you go ahead with your lives,
Remember to save trees to save a life



Priya Kumari
B.A. Programme
3rd year



TONGUE TWISTING TROUBLE



Better never trouble the trouble
Until trouble troubles you
For you are sure to make your trouble
Double trouble when you do.
And your troubles, like a bubble,
You are troubling about,
May be nothing but a cipher
With the rim ruffed out.



Shaheen Khanam
B.Com Programme
3rd year

From Deep Core of My Heart

One day when we all will be busy in our jobs and all , then suddenly a glance Of our old and sweet memories will keep through the window but as in that moment when we will try to stop them and hold them they will flushout Stop!! Stop!!

A requesting voice will come out from the deep core of our heart but no!! They will not come back .

Yes we will have a sadness of not getting those cheerful days again and happiness of having special glance of those beautiful days .

So guys please!! Please!! Enjoy every moment which you are having with your friends .

As they are very much special to you and will never come back again to you ..



Poornima Shrivastava
B.Com Programme
2nd year

Lockdown Diary



Time during this quarantine made us realize how important it is to connect with self; to be your own friend and what you are really all you got..... Whether you are happy or sad may be lonely, crying, confused or in any other mood...you have to watch your own back, you have to learn to deal with it ...yourself. This time made us grow up a little...it made us think ...made us re-evaluate how we see life.

Because of this epidemic, we were no longer able to interact with people face to face like we did before, we couldn't have fun, we weren't able to hangout with our friends as we did before.

For me, this quarantine set an example ... a reflection of the coming future and how we have to learn to live our lives with or without people near us.



As we know that vaccine is there to help us know, and we all are back on our track. But if have follow our safety measures through our all life. Be positive and stay safe.



Vinita Agarwal
B.Com Programme
2nd year

Art Gallery



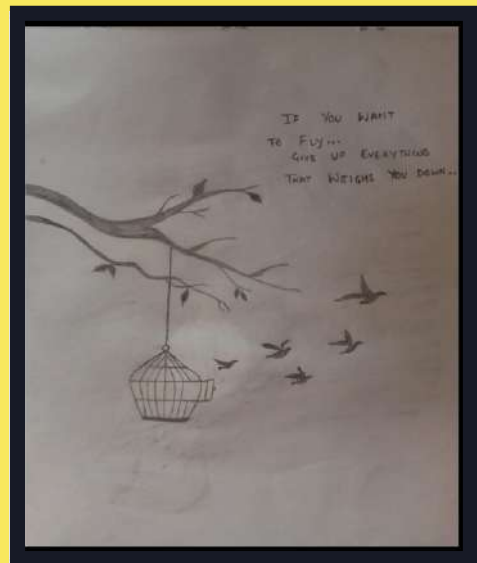
Antima
B.A. Programme
2nd year



Tannu Takral
B.A. Programme
1st year



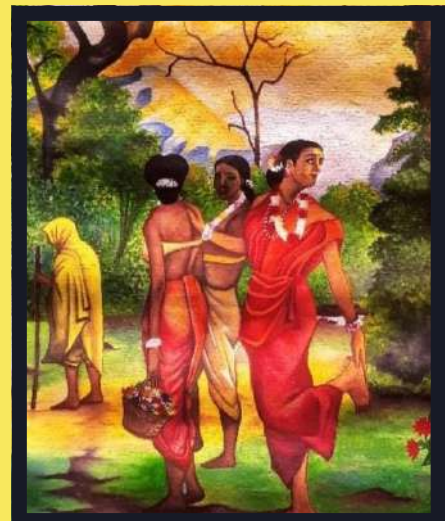
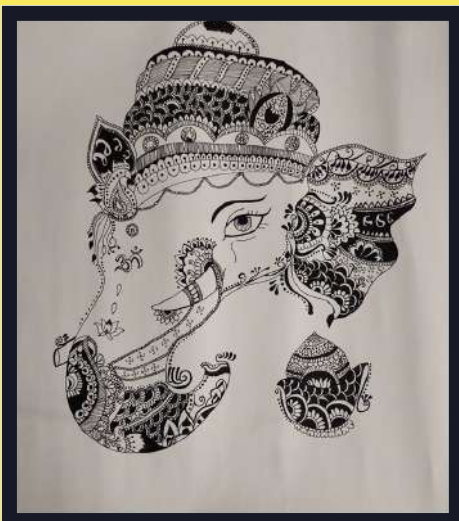
Neha
B.A. Programme
1st year



Simranjeet Kaur
B.Com Programme
1st year



Vishakha Singhal
B.Com Programme
1st year



Samiksha Mishra
B.Com Programme
1st year



Vishakha Singhal
B.Com Programme
1st year

POSTERS



Sheetal
B.A. Programme
1st year



Yogita
B.Com Programme
1st year



Muskan
B.A. Programme
1st year



Kumkum Saxena
B.Com Programme
1st year



Razia Bano
B.A. Programme
3rd year

STUDENT UNION

2020-21

Being Heads of the Student Union really opened our eyes to how we can make a difference in our college. We loved being the communicators between the students and teachers. Whenever a student had a problem, we cherished the feeling that they could always come and speak to us. At the beginning, it was difficult to manage academic expectations with our responsibilities, but with the help of our devoted teachers, we overcame the hurdles one by one. Heading the Student Council taught us patience and tolerance and how to handle different situations wisely. We realized that by pushing ourselves out of our comfort zones, we will reach our maximum potential.

We would like to advise our juniors to never let opportunities like these go and make the best of every chance they get to prove themselves. They should always learn from their failures instead of being disappointed because there is always a second chance to improve. The key to achieving great things is hardwork, honesty and belief in one's self. We wish the best to our juniors and heads of the future student councils to come. May the odds always be in your favour!

At the end, we thank our respected teacher Dr. Nivedita Giri. We are extremely grateful to have been given this opportunity to grow and learn lessons that would not have been possible otherwise. Thank you for always supporting and believing in us.

- Student Union
Kalindi College
NCWEB, DU



Varsha Kumari
(President)
B.Com 3rd Year



Simran Sachdeva
(Vice President)
B.Com 2nd Year



Garima Negi
(Proctor)
B.Com 3rd Year



Prachi Kumar
(General Secretary)
B.A. 3rd Year



Shruti Jha
(Joint Secretary)
B.Com 2nd Year



Ayesha Dhoundiyal
(Media Head)
B.A. 3rd Year



Ruksar
(Student Co-ordinator)
B.A. 3rd Year



Kumkum Saxena
(Class Representative)
B.Com 1st Year



Sheetal
(Class Representative)
B.A. 1st Year



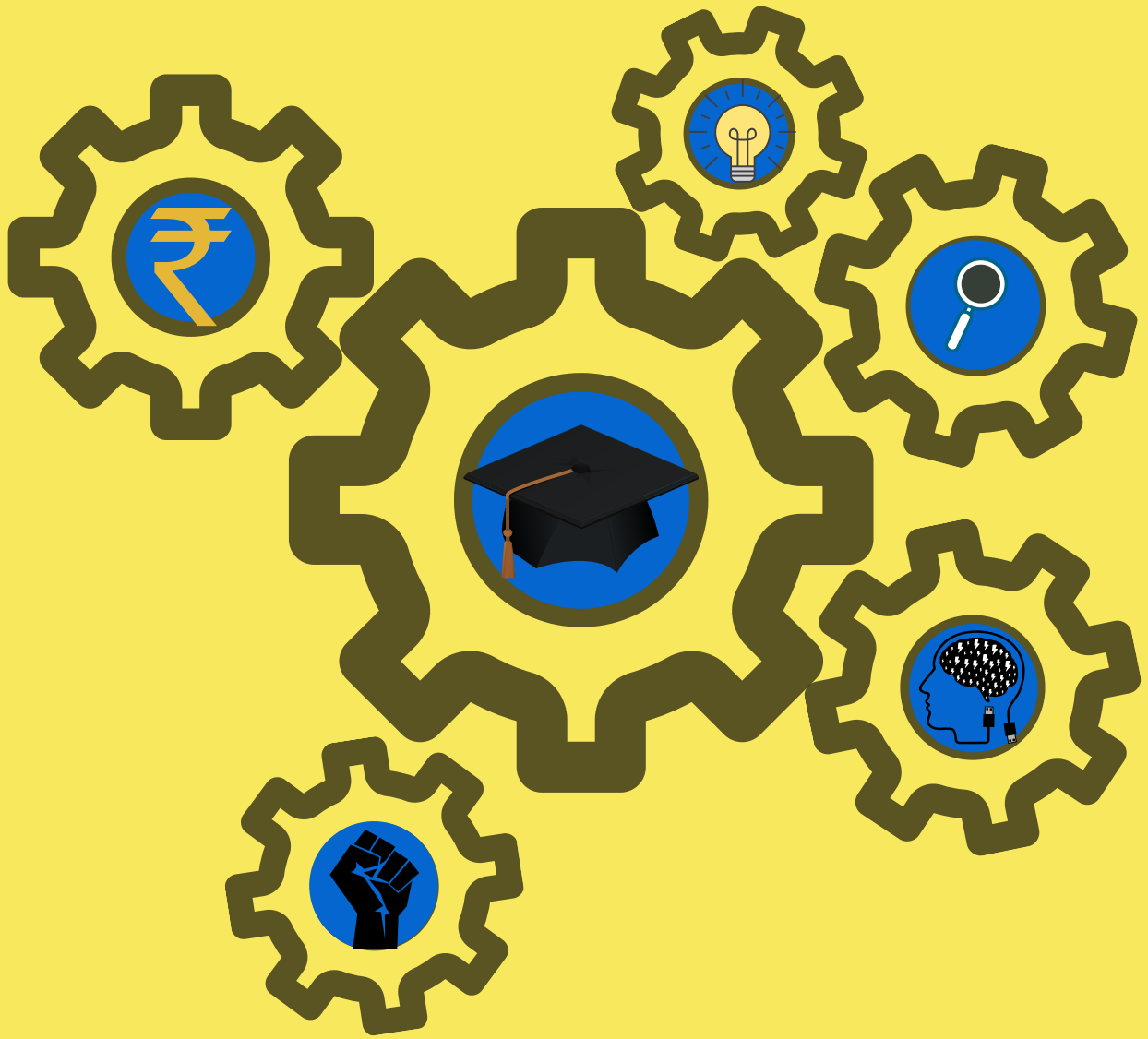
Gunjan
(Class Representative)
B.Com 1st Year



Sheetal
(Class Representative)
B.A. 1st Year



Esha
(Class Representative)
B.Com 1st Year



**“Gaining Knowledge is
Light in the Darkness,
But Spreading Knowledge
is Explosion of Power of
Learning.”**

*Magazine Design By
Garima Negi (B.Com 3rd Year)*